शोधार्थी	:	अंजली जोशी
शोध–निर्देशक	:	डॉ अजय कुमार नावरिया
विभाग	:	हिन्दी
विषय	:	समकालीन हिन्दी उपन्यासों में अभिवयक्त पहाड़ी जीवन का अध्ययन

शोध–सार

भूमंडलीकरण का यह दौर नए समाज की परिकल्पना को व्यक्त कर रहा है। साहित्य के स्तर पर बात करें तो कहा जा सकता है कि आदिकाल से आधुनिक काल की यात्राा में प्रत्येक काल अपने में बहुत कुछ समाहित किए हुए हैं। समकालीनता सिपर्फ वर्तमान में ठहरा हुआ क्षण नहीं है, वरन वह कई प्रवृत्तियों और समय खण्डों का समुच्चय है।

संस्कृति मानव की सामाजिक विरासत है। उत्तराखंड भारतीय संस्कृति का ही एक विशिष्ट भाग है। उत्तराखंड संस्कृति में लोकजीवन विषयक तत्वों का प्राधन्य रहा है। लोकगीत, लोकगाथाएँ, लोककथाएँ, लोकनृत्य और लोकभाषा यहाँ की संस्कृति के विशिष्ट उपादान रहे है। इसी प्रकार यहाँ के उत्सव, मेले, तीज त्यौहार एंव विभिन्न सामूहिक धर्मिक अनुष्ठान जन साधरण में एकीकरण की भावना तथा लोकसांस्कृतिक तत्वों को दृढ़ता प्रदान करते है।

पहाड़ी संस्कृति के प्रति वर्तमान पीढ़ी की उदासीनता दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। पहाड़ी संस्कृति का ह्मस हो रहा है क्योंकि रेडियो, सिनेमा आदि का प्रभाव बढ़ गया है। लोगों को अपनी धरती, अपनी मिट्टी से स्नेह नहीं रह गया। जीवनयापन के लिए उन्हें शहरों की तरफ रूख करना पड़ा। नगरीकरण के कारण पहाड़ी मनुष्य अपनी संस्कृति की रक्षा की बात कैसे सोचे? डॉ. बटरोही लिखते है कि 'भारत के महानगरों में तो पाश्चात्य संस्कृति व परम्पराओं का अन्धानुकरण हो रहा है और हमारा कूमार्चल भी इस प्रक्रिया में पीछे नहीं है।

स्त्री विमर्श तथा दलित विमर्श जैसे ज्वलंत मुद्दों को भी इन पहाड़ी उपन्यासों के माध्यम से अभिव्यक्त किया गया है। विद्यासागर नौटियाल "**झुण्ड से बिछुड़ा**"

तथा एस. आर. हरनोट "**हिडिम्ब**" के अतिरिक्त हिमांशु जोशी "**कगार की आग**" मनोहर श्याम जोशी "**कसप**" पंकज बिष्ट ""**उस चिडिया का नाम**" ""**लेकिन दरवाजा** तथा शैलेश मटियानी "**गोपुली–गफूरन**" ने भी अपने उपन्यासों में समाज की इन प्रवृत्तियों को स्पष्टता से प्रस्तुत किया है। इन उपन्यासों में स्त्री जीवन के अलग–अलग पक्षों पर विचार किया गया है।

शोध के अन्तिम अध्याय में भाषा और शिल्प के माध्यम से इन समकालीन पहाड़ी उपन्यासों का अध्ययन–विश्लेषण किया गया। कहा जा सकता है कि इन समकालीन उपन्यासकारों ने पौराणिक कथाओं, बिम्ब, प्रतीक तथा पौराणिक पात्राों के माध्यम से पहाड़ी समाज का इतना सजीव चित्राण प्रस्तुत किया कि वह यथार्थ के बहुत समीप नजर आता है। यथार्थपरक इस चित्राण में इन उपन्यासकारों ने भाषा के मिथकीय रूप का सहारा लेते हुए पहाड़ी जीवन के विषय में अपने भावों तथा विचारों को अभिव्यक्त किया है।

समकालीनता साहित्य और समाज का गहरा सम्बन्ध है। समाज में व्याप्त वर्तमान परिस्थितियों, परिदृश्यों, विसंगतियों और विडंबनाओं को समकालीनता की परिधि में सम्मिलित किया जाता है। साहित्य का सृजन करने वाला व्यक्ति विभिन्न अनुभूतियों, विराधभाषों भावनाओं एवं यथार्थ जीवन से प्रभावित होता है। साहित्य रचना करते समय साहित्यकार पर अपने समाज और परिवेश का गहरा प्रभाव पड़ता है। इसी से प्रभावित होकर वह मौलिक साहित्य का सृजन करता है, चाहे वह परिवेश उसका जन्मस्थान हो या वह वहाँ आकर बसता हो। निर्भर करता है कि वह अपने आस–पास की वस्तुओं, सम्बन्धों को किस अनुभूति से व्यक्त करता है। स्पष्ट है कि साहित्य सृजन के केन्द्र में अनुभूति की प्रवणता है। यही कारण है कि विद्यासागर नौटियाल, मनोहरश्याम जोशी, शैलेश मटियानी, पंकज बिष्ट, हिमांशु जोशी तथा एस. आर. हरनोट आदि उपन्यासकारों का सम्बन्ध पहाड़ी जीवन से होने के कारण इन रचनाकारों ने अपनी रचनाओं में पहाड़ी जीवन के परिवेश, विभिन्न परिस्थितियों, समाज तथा संस्कृति को अभिव्यक्त किया है।